[81 & A-27]

No. of printed pages : 4

SARDAR PATEL UNIVERSITY
M.A. (GUJARATI) (III Semester) Examination
12th April 2016 (Tuesday)
2.30 pm – 5.30 pm
PA03SGUJ03 – TRANSLATION & EDITING (અનુવાદ અને સંપાદન)

Total Marks : 70

પ્રશ્ન: ૧ સાહિત્યસંપાદનના પ્રકારો જણાવી ,તેની ઉપયોગિતા વિશે વિગતે જણાવો.

(ગુણ :૧૫)

અથવા

ટૂંક નોંધ લખો. (બન્ને)

૧) સંપાદકની સજ્જતા   ૨) સંપાદકીય

પ્રશ્ન : ૨ મધ્યકાલીન ગુજરાતી સાહિત્યના સંપાદનની પધ્ધતિ અને તેમાં આવતી સમસ્યાઓનો વિગતે પરિચય કરાવો.

(ગુણ :૧૫)

અથવા

ચરોતરની લોકકથાઓનું સંપાદન કરવું હોય તો કઈ પ્રક્રિયામાંથી પસાર થવું પડે તે વિશે વિગતે જણાવો.

પ્રશ્ન: ૩ 'અનુવાદ , ભાષાન્તર , ભાવાનુવાદ , રૂપાન્તર –આ સંજ્ઞા વચ્ચે રહેલા અર્થભેદને સ્પષ્ટ કરી અનુવાદ પ્રવૃત્તિની સમસ્યા વિશે જણાવો.

(ગુણ :૧૫)

અથવા

ટૂંક નોધ લખો. (બન્ને)

અ. અનુવાદ કળા કે વિજ્ઞાન ?   બ. અનુવાદકની સજ્જતા

પ્રશ્ન-૪ હિન્દી અથવા અંગ્રેજી ફકરાનો ગુજરાતીમાં અનુવાદ કરો. (ગુણ :૧૩)

बहुत वरस पहले हमारे इलाके के एक घर में चोरी हुई। लोगों ने चोरों का पीछा किया। चोर आगे और वे पीछे। चोर भागता हुआ यहां आया। चांदनी रात थी। चोर छठे ताड़ की कोटर में छुप गया। पीछा करने वालों की आहट सुनकर चोर ने ताड़ से विनती की, 'ओ पेड़, मुझे बचा लो !' उसकी फरियाद सुनकर ताड़ ने अपनी कोटर के किनारोंको सटा दिया ओर उसे अपने आलिंगन में छुपा लिया। पीछा करने वालोंने हम छहों पेड़ के आसपास उसे खूब ढूंढा, पर वह उन्हें नहीं मिला। हारकर वे चले

(P.T.O.)

गए। खतरा टल गया तो ताड़ ने कोटर का मुंह फिर खोल दिया। ताड़ का पेड़ बूढ़ा हो जाता है तो उससे बहुत अच्छी खुशबू आती है। कुछ लोग तो यहां तक मानते हैं कि उनके अंदर चंदन बनती है। सो चोर ताड़ से बाहर आया तो रोम रोम सुवास बसी हुई थी। वह जहाँ भी जाता चारों ओर चंदन की सुवास हमेशा के लिए उसके शरीर में रच-बस गई।

एक बार वह चोर किसी शहर में गया। उसके पास से निकलते एक आदमी ने सहसा ठिठककर पूछा, 'इतना बढ़िया इत्र तुम्हें कहां मिला? चोर ने कहा, इत्र? मेरे पास इत्र-वित्र नहीं है।

राहगीर ने गहरी सांस ली और कहा, 'वाह कितनी अच्छी खुशबू है । यह इत्र मुझे दो, अच्छे दाम दूंगा।' चोर ने फिर कहा, 'अजीब आदमी हो। कहा न मेरे पास कोई इत्र नहीं है। तुम्हारा नाक खराब हो गया है।'

राहगीर बहुत तेज आदमी था। वह राजा के पास गया और उससे कहा, 'शहर में एक परदेशी आया है। उसके पास बहुत बढ़िया इत्र है। शायद वह महाराज को देने के लिए राजी हो जाए।'

राजा ने चोरको बुलाया। चोर थरथर कांपने लगा। बोला, मझे मत मारो, मैं सब बताता हूं।

उसने राजा को बताया कि कैसे ताड़ ने अपने में छुपाकर उसकी जान बचाई और कैसे चंदन की खुशबू उसके अँग-अँग में बस गई।

राजा ने कहा, मेरे साथ चलो और बताओ कि वह अद्‌भुत पेड़ कहाँ है।

जल्द ही वे यहां पहुंच गए। राजा ने उस ताड़ को काटकर राजमहल ले चलने का आदेश दिया।

અથવા

Every state in India has its own distinctive forms of folk theatre. Variously known as Jatra in Orissa, Bengal and Eastern Bihar, Tamasha in Maharashtra, Nautanki in Uttarpradesh Rajasthan and Panjab, Bhavai in Gujarat, Yakshagana in Karnataka, Therubuttu in Tamilnadu , Indian Folk Theater with its sheer vibrancy since the age-old days has reached out to all.

Artistically, folk theatre in India eloquently exemplified the nine rasas of the Indian Drama. Some of the folk theatres even depicted the true aura of the classical theatres amidst its artistry. Chhau, Lion dance, Santhal dance –all contributed in weaving that magical luster of Indian folk theatre which not only stood out as an eminent theatre pattern but also as the plays in depicting the realism of life, love, death, virtues and vice. The typical concept of stage designing of folk theatre in India once again points towards its simplicity.

The actors of the Indian folk theatre generally perform in the make shift stage. This supports immensely in conversing with the audience in the course of the play as audience participation is an essential part of Indian folk theatre.

The stage for the folk theatres is generally a colossal empty space, which the actors dexterously control and employ to complement with their dialogues and symbolic gestures. Elaborate makes-ups, masks, chorus, loud music and folk dance are indeed the hallmark of the Indian folk theatre.

પ્રશ્ન: ૪ નીચેના હિન્દી અથવા અંગ્રેજી પદ્યખંડનો ગુજરાતીમાં અનુવાદ કરો. (ગુણ:૧૨)

ध्वनि

अभी न होगा मेरा अन्त ,
अभी-अभी ही तो आया है
मेरे वन में मृदुल वसन्त ,
अभी न होगा मेरा अन्त ।

हरे - हरे ये पाते,
डालियाँ, कलियाँ कोमल गात।
मैं ही अपना स्वपन-मृदुल-कर
फेरूँगा निद्रित कलियों पर
जगा एक प्रत्यूष मनोहर।

पुष्प पुष्प से तन्द्रालस लालसा खींच लुँगा मैं,
अपने नव जीवन का अमृत सहर्ष सींच दूँगा मैं,

द्वार दिखा दूँगा फिर उनको
हैं मेरे वे जहाँ अनन्त-
अभी न होगा मेरा अन्त ।

मेरे जीवन का यह है जब प्रथम चरण,
इसमें कहाँ मृत्यु
है जीवन ही जीवन।
अभी पड़ा है आगे सारा यौवन;
स्वर्ग-किरण-कल्लोलों पर बहता रे यह बालक-मन;

मेरे ही अविकसित राग से
विकसित होगा बन्धु दिगन्त-
अभी न होगा मेरा अन्त।

कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला'

(P.T.O.)

અથવા

O my friend comes...

I will share my woes with you,

I will show you my wounded soul,

You will repent when I die.

Come...

I will show you my wounded soul.

My parents chose my match.

I was still a budding kid

I was burnt to ashes,

Come to share my agony and pain.

I was married to a bald headed middle aged groom

Who has turned gray.

It would have been better to get married to an insane groom

They have tied a sheep and a dog with the same chain,

First of all find a way for separation,

O Bride looks at the sky...

I become lucky when I delivered a son,

Now I shall be having no misery,

My Mother in-low is happy since then,

Now I shall be having no misery.

(folk song)